Padma Vibhushan

SMT. KUMUDINI LAKHIA (POSTHUMOUS)

Smt. Kumudini Lakhia was a renowned Kathak dancer having a career in dance spanning over seventy-five years.

2. Born on 17th May, 1930, Smt. Lakhia received her education in Agriculture Science from University in Allahabad. A journey in dance came to her accidentally at the age of 17 when the famous Indian dancer Shri Ram Gopal offered her a role as his partner; with him she toured the world and it was this experience which laid the foundation for a holistic approach to dance and a life-time commitment to this field. She received the Government of India scholarship to take further training in kathak from the legendary guru Shri Shambhu Maharaj ji at the Sri Ram Bhartiya Kala Kendra, New Delhi.

3. After a long and successful career as a dancer with performances in over fifty countries, Smt. Lakhia chose to give up her career as a solo performer to start the Kadamb Dance Centre in Ahmedabad in 1964, where she focused her energies and vision on the development of the technique, vocabulary, and repertoire of the Kathak dance. From a rural and temple background and a stigma of the notch, she has in her long endeavor for Kathak elevated its place in the social fabric of India and internationally and given it its rightful place in the ancient classical arts of India. With the help of her students whom she trained in a rigorous routine, she started choreography and dance designing in 1973. Her performing company Kadamb has toured extensively around the world (in more than forty countries) where it has received critical acclaim and connoisseur's appreciation. An intelligent approach in the themes and its choreography Kadamb has provided a new dimension to the Kathak dance form. Kadamb Centre for Dance embodies the India story through her story of Kathak as a dance form.

4. Smt. Lakhia was conferred with 'Padma Shri' in 1987 and 'Padma Bhushan' in 2010. She received 'Pandit Omkarnath Award' from the Government of Gujarat in 1990; 'Kalidas Samman' from the Government of Madhya Pradesh in 2003; 'Tagore Ratna' from the Central Sangeet Natak Akademi in 2012; 'Guru Gopinath National Natya Puraskar' from the Government of Kerala in 2021. She has been conferred with honorary Doctorate by the ITM University, Gwalior in 2021. She has been on the advisory board for significant institutes like the Council International de la Dance (CID, Paris), Sangeet Natak Akademi (New Delhi), Kalakshetrab (Chennai), Kathak Kendra (New Delhi), Indian Council for Cultural Relations (New Delhi).

5. Smt. Lakhia passed away on 12th April, 2025.

श्रीमती कुमुदिनी लाखिया (मरणोपरांत)

श्रीमती कुमुदिनी लाखिया एक प्रसिद्ध कथक नृत्यांगना थीं जिनका पचहत्तर वर्षों से अधिक का नृत्य करियर रहा ।

2. 17 मई, 1930 को जन्मी, श्रीमती लाखिया ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से कृषि विज्ञान में शिक्षा पाई। नृत्य की उनकी यात्रा 17 वर्ष की उम्र में संयोग से शुरू हुई, जब प्रसिद्ध भारतीय नर्तक श्री राम गोपाल ने उन्हें अपने साथी के रूप में भूमिका निभाने का प्रस्ताव दिया; उनके साथ उन्होंने दुनिया भर का भ्रमण किया और उनके इस अनुभव ने नृत्य के प्रति एक समग्र दृष्टिकोण और इस क्षेत्र में उनकी आजीवन प्रतिबद्धता की नींव रखी। उन्हें श्री राम भारतीय कला केंद्र, नई दिल्ली में महान गुरु श्री शंभू महाराज जी से कथक में आगे की शिक्षा लेने के लिए भारत सरकार की छात्रवृत्ति मिली।

3. पचास से अधिक देशों में नृत्य प्रस्तुतियों के साथ नृत्यांगना के रूप में एक लंबे और सफल करियर के बाद, श्रीमती लाखिया ने एकल कलाकार के रूप में अपना करियर छोड़कर 1964 में अहमदाबाद में कदम्ब नृत्य केंद्र शुरू किया, जहां उन्होंने अपनी ऊर्जा और दृष्टि को कथक नृत्य की तकनीक, शब्दावली और प्रस्तुति के विकास पर केंद्रित किया। उन्होंने कथक के लिए अपने लंबे प्रयास में उसकी ग्रामीण और मंदिर की पृष्ठभूमि तथा एक प्रकार के देवदासियों के नृत्य के कलंक से उबारकर उसे भारत के सामाजिक ताने–बाने में और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ऊंचाई तक पहुंचाया और भारत की प्राचीन शास्त्रीय कलाओं में इसे इसका उचित स्थान दिलाया। उन्होंने अपने छात्रों को एक कठोर दिनचर्या में प्रशिक्षित किया और उनकी मदद से 1973 में कोरियोग्राफी और नृत्य डिजाइनिंग शुरू की। उनकी प्रदर्शन करने वाली कंपनी कदम्ब ने दुनिया भर में (चालीस से अधिक देशों में) बड़े पैमाने पर दौरा किया है, जहां इसे आलोचकों की तारीफ और पारखी लोगों की सराहना मिली है। कदम्ब ने थीम और उसकी कोरियोग्राफी में एक बुद्धिमत्तापूर्ण दृष्टिकोण लाते हुए कथक नृत्य शैली को एक नया आयाम दिया है। कदम्ब नृत्य केंद्र ने कथक नृत्य शैली की कहानी के माध्यम से भारत की कहानी को मूर्त रूप दिया है।

4. श्रीमती लाखिया को 1987 में 'पद्म श्री' और 2010 में 'पद्म भूषण' से सम्मानित किया गया था। उन्हें 1990 में गुजरात सरकार से 'पंडित ओंकारनाथ पुरस्कार', 2003 में मध्य प्रदेश सरकार से 'कालिदास सम्मान', 2012 में केंद्रीय संगीत नाटक अकादमी से 'टैगोर रत्न' और 2021 में केरल सरकार से 'गुरु गोपीनाथ राष्ट्रीय नाट्य पुरस्कार' मिला। उन्हें 2021 में आईटीएम विश्वविद्यालय, ग्वालियर ने डॉक्टरेट की मानद उपाधि से सम्मानित किया। वह काउंसिल इंटरनेशनल डे ला डांस (सीआईडी, पेरिस), संगीत नाटक अकादमी (नई दिल्ली), कलाक्षेत्र (चेन्नई), कथक केंद्र (नई दिल्ली), इंडियन काउंसिल फॉर कल्चरल रिलेशंस (नई दिल्ली) जैसे महत्वपूर्ण संस्थानों के सलाहकार बोर्ड में रही थीं ।

5. 12 अप्रैल, 2025 को श्रीमती लाखिया का निधन हो गया ।